भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 18 अंक : 10 | गुरुवार, 26.10.1995 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मवाह

सत्संग का बेरोमीटर

वेदों, उपनिषदों और अन्य कई धर्मशास्त्रों में भगवान के स्वरूप का वर्णन आता है और कसनी सहने वाले, मर्जी के मुताबिक चलने वाले उनके संतों के, हरिभक्तों के, मुक्तों के बारे भी खूब अलंकारों और विशेषणों से भरपूर भाषाओं में लिखा हुआ है। कई ऐसी धार्मिक पुस्तकों जैसे-गीता व भागवत का श्रावण मास में पाठ भी करते हैं, तब भी कल्यायण की प्रतीति नहीं आती और अंतःकरण की शाश्वत् शुद्धि नहीं होती व देह के रहते हुए ही वासना टलकर, प्रकृति बदल कर, ब्रह्मरूप होकर जीव को भगवान का साक्षात्कार भी हुआ लगता नहीं। कई बार कथा, भजन, कीर्तन करने पर भी भगवान के स्वरूप का सुख, शांति या आनंद का अनुभव नहीं होता। ऊपर-ऊपर के सात्विक सुख या मन, प्राण, अन्न विज्ञान या आनंदमय कोशों की शांति को सच्ची मान कर अपरिमित अनंतगुणा, ऐश्वर्यपूर्वक ऐसे सर्वोपरि भगवान की झांकी तक नहीं हो पाती। इन सब का मूल कारण सच्चा ज्ञान और सच्चे संत्संग का अभाव है। भगवान को धारे हुए निर्वासनिक संत द्वारा ही सत्शास्त्र का सेवन हो तब ही सच्चा सत्संग दृढ़ होता है और देह रहते ही कीड़े की भौंरी बन कर आज्ञा और उपासनारूप दो पंख दृढ़कर अक्षरधाम का अलौकिक सुख प्राप्त हो पाता है और नम्रभाव से समग्र सत्संग को दिव्य मानकर, निर्दोषबुद्धि रखकर सेवा हो पाती है। हमें तो साक्षात् दिव्यमूर्ति संत प.पू. योगीजी महाराज के रूप में मिले हैं, तो भी दिव्यसुख-आनंद नहीं पाते। सो अंर्तदृष्टि करके सत्संग का बेरोमीटर हम सभी को नापना चाहिए, जिससे हमारी आध्यात्मिक भूमिका और देह रहते हुए ही धाम का निर्गुण सुख लेने की स्थिति का भान हो जाए तथा जाग्रतता रहती जाए। भीतर के शुद्धभाव से तलाश करने वाले को स्वामिश्रीजी और संतों प्रगट प्रमाण प्रतीति करा देते ही हैं, यह पक्का समझना और गुरुमुखी होकर वे जैसा कहें, वैसा करने लग पड़ना।

कल्याण तो-प्रगट संत और स्वामिश्रीजी का आसरा हुआ है, सो निश्चित है ही। लेकिन सुख लेने की बात आए, स्थिति प्राप्त करने की बात आए वहां तो जैसे श्रीजी महाराज ने सद्गुरु प्रेमानंद-स्वामी द्वारा मूर्ति का वर्णन सुनने के बाद आखिर में कहा था कि 'अंतर की प्रसन्नता' पानी हो, उसके लिए तो सच्चे संत का सेवन करके अलग साधन करने पड़ते हैं। तब ही दिव्यमूर्ति सिद्ध होगी तथा अखंडित रहेगी व जाग्रतता निरन्तर रहकर हमेशा सुख और अहोहोभाव रहेगा। सो, हम सभी को ऐसे महान गुरु मिलने के बाद निश्चय में, आसरे में, सत्पुरुष की आज्ञा में या अखंड अनुसंधान में कितना बदलाव हुआ होता है, जाग्रतता कितनी चूक जाते हैं और संतों और निष्ठा वाले हरिभक्तों में कितना मनुष्यभाव आ जाता है वह अवश्य ढूंढ लेना जरूरी है। इससे प्रगट सत्पुरुष के पास निष्कपट होकर, निर्दोष बुद्धि और दिव्यभाव दृढ़ करने में बाधारूप बनती या तो प्रगट संतों में सर्वोपरिभाव से-असाधारण लगाव व प्रीति से जुड़ जाने की कसर दूर करने में आसानी होगी और जीव बल को पा जायेगा। जैसे बनिया अच्छे अक्षरों से बही खाता रखता है, वैसे छोटी से छोटी भावनाएं, प्रेरणा, भाव, वृत्ति या वेग की तीव्रता को सभी तरह से तलाश कर लेनी चाहिए। इससे मध्य 45 के मुताबिक 51 भूतों या मायिकभावों को दूर करने की कला साधु के पास से सरलता से प्राप्त हो सकती है।

विषय के सुख दुःखस्वरूप ही हैं, यह जानने के बावजूद अव्यक्त रागों में हम उनमें खींचे जाते हैं। ऐसी तीव्र वासना या प्रकृति को सर्वथा के लिए दूर करने हेतु ही स्वामिश्रीजी और गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने परोसी हुई थाली के रूप में बहुत ही सरल व आसान गुणातीत ज्ञान की बातें हमारे अंतर में रख दी हैं और अतिशय लगाव व निजी संबंध स्थापित करके हमें संभाला है। फलस्वरूप सबीज ज्ञान के ऐसे पेड़ होने लगें और सुहृदभाव से सभी उसका अमृत रस-सब रस के रूप में भोगें व दूसरों को दे सकें। ऐसी सर्वोपरि प्रकृति पुरुष से पर के सबीज ज्ञान की जो बातें बड़े-बड़े पंडित, शास्त्रों के ज्ञाता भी समझ नहीं पाये, वह भोले-भाले गांव के हरिभक्त ने सहज ही पचा लिया और स्वरूपनिष्ठा परिपक्व करके अब संघनिष्ठ के रूप में, सुहृदभाव से-निर्दोषबुद्धि के रूप में ऐसे ज्ञान की खुशबू हर एक को प्राप्त करवाने में समर्थ बने हैं। यह हमारा बहुत बड़ा अहोभाग्य ही माना जाए। यह सब प्रगट गुरुवर्य योगीजी महाराज की दृष्टि से ही हो रहा है और होता जाता है,इतना ही समझना है। इसमें जरा भी भूलचूक न हो-यही तलाश करने की सभी को विनती है। इस ज्ञान की आखिरी कक्षा में आत्मा और परमात्मा ही रहते हैं और धाम, धामी तथा मुक्तों की दिव्यभाव से-

निर्दोषभाव से ही सेवा हुआ करती है, जहां अखंड-अलौकिक आनंद, सुख और शांति दिखाई पड़ती है और परमपद-परम कल्याण की देह रहते ही प्रतीति होती है।

अहो हो ! कैसे महान संत मिले हैं कि जिनके सच्चे प्रसंग से वासना का क्षय और प्रकृति के परिवर्तन का देह रहते ही अनुभव होता है ! सभी शास्त्रों का और धर्मों का अंतिम रहस्य और फल ऐसे सत्संग से ही प्राप्त होता है। सो प.पू. योगीजी महाराज और संतों का समागम कर लेने की ही लगन रखनी। उनकी बातों के ऊपर सोचना और एकांत में बैठकर भीतर में धारना और गहराई में जाकर निरीक्षण करना तो जवाब तुरन्त ही मिल जाएगा। हमारी वासना, स्वभाव या प्रकृति तुरन्त ही दिखाई भी देगी। देखना, हम किस कक्षा की ओर जा रहे हैं और प्रगट संत द्वारा ही अंतिम ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करने में क्या आड़े आता है वह नोट करके दूर करने प्रयत्न करना।

1. पहली कक्षा मुमुक्षु की है और आसरा ही प्रधानत्व है। जैसे जगत में वैसे ही मंदिर की क्रिया मेंऔर सत्संग में ! स्वभावों का पोषण हो वहां तक निभते हैं, वर्ना तो दुःखी हो जाते हैं।

2. आज्ञा-मध्य 51 के मुताबिक टुक-टुक पाले तो देशकाल लगे नहीं और विषय के संकल्प नड़े नहीं। इसमें धर्म, नियम, और स्वरुपनिष्ठा समा जाती है, लेकिन अखंड वृत्ति नहीं रहती।

3. अनुसंधान-अखंड ध्यान और भजन जीव में हुआ करे। अव्यक्त् राग टलते जाते हैं। वैसे-वैसे मूर्ति का दिव्य सुख मिलता जाता है। एकांतिकभाव सिद्ध होता है और किसी का भी अभाव-अवगुण या द्रोह में जाते नहीं या तो प्रीति द्वारा ऐसा अखंड अनुसंधान प्राप्त करना पड़ता है, जिससे दोष नड़ नहीं पाते। अपार लगाव वाले भक्त का चूरा करके भी गुरुजी-संत की आज्ञा महिमा सहित पालते हैं, सो उसे निश्चय या निष्ठा द्वारा भी कृपा से अखंड अनुसंधान सिद्ध हो जाता है।

4. एकता-साधर्म्य-केवल आत्मा और परमात्मा दो ही रहें, वह आखिरी ब्राहीस्थिति कहलाती है। इसमें अखंड जाग्रतता रहती है। दासभाव से, निष्कामभाव से समग्र सत्संग की सेवा हुआ करती है। तनिक भी अंहता या ममता का भार, कर्तव्य का भार, ऐश्वर्य का राग या ज्ञान, भक्ति, वैराग्य का जरा भी अभिमान दिखाई देता नहीं। सभी क्रिया निर्गुण बन जाती है। वच मध्य-66 मध्य-30, अमदावाद-2, अत्यं, 11-39 वगैरा के मुताबिक की ज्ञान समाधि प्रथम 24 के मुताबिक अखंड रहती है।

ऐसी अलौकिक स्थिति स्वामिश्रीजी सभी हरिभक्तों को देह रहते ही प्राप्त कराएं और निर्दोषबुद्धि दृढ़ कराके, समग्र सत्संग दिव्य माना जाए ऐसी दृष्टि करें यही प्रार्थना है। पल-पल, प्रसंग-प्रसंग पर परिस्थिति बदलते चारों युग के धर्म दिन में ही दिखाई देते हैं और खूब ही समागम करने पर भी मन की, अहम् का बेरोमीटर सहज-सहज में ही बढ़ता-कम होता ही जाता है और सत्पुरुष व स्वामिश्रीजी के प्रति स्थितप्रज्ञता या स्थिरता का एक तरह भाव नहीं रहता यही खोट है। तो गुरुजी को प्रार्थना करके दूर हो जाए वैसा सभी प्रयत्न करना और अखंड जाग्रतता सिद्ध हो जाए ऐसी कृपा करें यही विनती है।

प.पू. काकाजी महाराज
जनवरी, 1956

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ

भक्ति-महिमा से भरपूर छपैया-यात्रा

उत्तर भारत के भक्तों के अन्तर की इच्छा को साकार रूप देने, जीवन में भक्ति-महिमा की सुवास प्रगटाकर परम धन्यता का अनुभव कराने तीर्थभूमिरूप छपैया-पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण के जन्म स्थान-देवता भी जिसके दर्शन की इच्छा करें, ऐसे परम पवित्र तीर्थ का दर्शन कराने के लिए प.पू. गुरुजी ने 28 सितंबर 95 से 2 अक्टूबर 95 तक के महामंगलकारी दिन चुने.. सोने में सुहागारूप जूनागढ़ से पुराने जोगी पू. आणंद बापा एवं परिवार तथा ताड़देव के नवयोगेश्वरों में से पू. भरतभाई, पू. वशीभाई, पू.अरुणभाई, पू.अश्विनभाई एवं पू, किशोर गिल्डर, पू. हेमतभाई मर्चेंट, पू. राऊत आदि व बहनों भी इस तीर्थयात्रा में पधारे थे।

करीब 200 हरिभक्तों का संघ 28 सितम्बर 95 की रात को फरक्का एक्सप्रेस से निकल कर 29 की दोपहर को फैजाबाद स्टेशन पर उतरा। फैजाबाद में नए ही परिचय में आए प.भ. महेन्द्र वर्माजी ने पू.गुरुजी व संतों के प्रति अत्यधिक सद्भावना रखकर भावपूर्ण हृदय से सेवा करके भक्तिपूर्ण संस्कारों का अनुपम परिचय दिया। शाम तक सभी छपैया पहुंच गए। वहां पहुंचते ही सभी ने भीतर में एक अलौकिक शांति, अनोखा दिव्य आंदोलन व पवित्रता की खुशबू का अनुभव किया। मानो दुनिया से अलग एक कोने में अक्षरधाम में प्रवेश हुए हों।

छपैया मंदिर के विशाल प्रांगण के मध्य में जन्मस्थान की देरी है। उसी के पास भगवान स्वामिनारायण का मंदिर है, जिसमें बालस्वरूप घनश्याम महाराज की अत्याधिक मनमोहक मूर्ति है.... जिसका दर्शन करते ही रहने का मन करता है। उसके साथ ही एक दूसरे मंदिर में घनश्याम महाराज और श्री राधाकृष्ण की मूर्ति है।

30 सितम्बर 95 को सभी ने नारायण सरोवर पर पू. गुरुजी के सान्निध्य में धून करी। धर्मदेव व भक्तिमाता के समाधि स्थान पर धून व प्रदक्षिणा करके सभी मीन तालाब-जहां महाराज ने मछलीयों का उद्धार किया और मछुआरे को यमलोक दिखाया.....जामुन का वृक्ष-जहां महाराज छुपाछुपी खेलते थे..... तिकोना खेत-महाराज के मामा का खेत-जहां कड़वी कचरी मीठी करी....भूतिया कुआं-जहां महाराज ने भूतों का उद्धार किया..... आदि प्रसादिक स्थलों का दर्शन करने गए। भूतीया कुएं पर सभा करते हुए पू. गुरुजी ने बात करी-

''जब से यहां आए हैं तब से हर एक ने यही बात कही है कि यहां शांति लगती है... यहां की रज-रज चैतन्यमय स्वरूप है। पू. स्वामिजी जब यहां आए तब उन्होंने यही बात करी थी... उनकी इस बात में आस्तिकभाव रखना है।''

पू. गुरुजी ने इस सभा में प.पू. काकाजी द्वारा दिए सिद्धांत-दो जोड़ में रहकर काम करने पर खूब आग्रह दिया कि-एक रुचि वाले मिल कर काम करो तो लाखों-करोड़ों के बराबर... प.पू. गुरुजी के जोड़ करने के आग्रह से कईयों को मानसिक समाधान मिले ! अनेक भक्तों ने जोड़ में रहकर काम करके-प.पू. गुरुजी को राजी करने का संकल्प भी किया...

इसी दिन शाम को नारायण सरोवर पर परिक्रमा करने के बाद पू. गुरुजी ने सभा में बात करते हुए रुचि व सुरुचि की परिभषा बताई कि-**'सामान्यतः स्वयं के ढंग से, स्वयं की मर्जी से बड़े पुरुष को प्रसन्न करने कोशिश वह 'रुचि' है और संत की मर्जी, अभिप्राय के मुताबिक जो वर्तने को कोशिश करे वह 'सुरुचि !' पर अपने यहां तो कोई अपने ढंग से जीता ही नहीं... हर एक को लगन है कि गुरुमुखी रहकर, मर्जी में रहकर संत को प्रसन्न करे। तो पू. काकाजी जो फर्क हमें पूछते थे, वह यह कहना चाहते थे कि संत की मर्जी में जीने का हम ठहराव करें, संकल्प करें-वह है 'रुचि।' पर उस सत्य को लेकर चलना ही शुरु कर दें-उसे क्रियान्वित ही कर दें वह है 'सुरुचि....'**

पू. गुरुजी ने छपैया की भूमि पर पांव रखते ही पहले दिन पू. हरिप्रसादस्वामिजी की स्मृति करा कर जो कहा था कि-छपैया की रज-रज चैतन्यस्वरूप है, उस बात की पुष्टि करने महाराज ने एक अद्‌भुत चमत्कार पू. भाईस्वामिजी की हाज़िरी में प.भ. कैलाशजी इत्यादि आठ-दस हरिभक्तों को 30 तारिख़ की रात को ही अनुभव कराया-पू. भाईस्वामिजी नारायण सरोवर के किनारे आठ-दस हरिभक्तों के साथ धून करने बैठे थे। मंदिर का दरवाजा बंद हो गया था। थोड़ी देर बाद पू. भाईस्वामिजी व धून करते सभी हरिभक्तों ने रात के अंधकार में मंदिर के बंद दरवाजे में प्रकाश के चार गोले निकलते देखे। वे गोले नारायण सरोवर की परिक्रमा करके सरोवर के बीचों-बीच तली में उतर गए। पहले सभी को यह भ्रम लगा, किन्तु सभी ने वैसा ही अनुभव दोबारा साक्षात् देखा। पू. भाईस्वामिजी व साथ के हरिभक्तों ने अन्य सभी को यह बात करी। इस संदर्भ में पू. गुरुजी को जब बात करी तो उन्होंने भी कहा कि इस जगह का प्रभाव ही ऐसा है कि देवता भी यहां के दर्शन के इच्छुक होते हैं। तो वे प्रकाश का गोले वही प्रतीति कराते हैं।

1 अक्टूबर' 95 को सभी अयोध्या की पावनभूमि का दर्शन करने गए। यहां सरयू नदी में गुणातीत समाज के सभी मुक्तों की चैतन्यजननी प.पू. सोनाबा का अस्थि विसर्जन किया गया। यही से महाराज ने अपना वन-विचरण भी शुरु किया था। अयोध्या में भगवान रामचन्द्रजी की जन्मभूमि के दर्शन करके सभी हनुमानगढ़ी थे मंदिर गए। श्रीजी महाराज यहां रोज शाम को आरती करने आते थे। फिर श्रीजी महाराज के निवास स्थान-स्वामिनारायण मंदिर गए, जहां प्रभु ने यज्ञोपवीत संस्कार, विद्याभ्यास और अन्य लीलाएं करी थीं।

छपैया की इस यात्रा को सुगम-सफल बनाने में पू. कौशिकभाई, पू. विजय भाई मेहता, पू. विनोदभाई, पू. राकेशभाई, पू. कमलभाई दालिया, पू. प्रभाकरभाई इत्यादि ने कोई कमी नहीं रखी। साथ ही सद्‌गुरु महंत प.पू. स्वामि हरिकृष्णदासजी, प.पू. पार्षदवर्य कोठारी श्री दिगम्बर भगत, पू.योगीस्वामी ने जिस अपनेपन, आत्मीय भाव से भक्तों के ठहरने की व्यवस्था करी वह सच में अनकरणीय है। उनका विवेक, व्यवहारिकता, सेवा पू. गुरुजी को खूब स्पर्श कर गई....

✡✡✡

सुवर्ण जयंती का उत्सव

पू. गुरुजी के साथीदार के रूप में दिल्ली के समाज को ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज की अनमोल भेंट यानि-**पू. भाईस्वामिजी** की सुवर्ण जयंती 8 अक्टूबर' 95 अनिर्देश में शरदपूर्णिमा के दिन **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी** के प्राकट्योत्सव के साथ-साथ मनाकर सभी ने प.पू. काकाजी के प्रति अनुपम भक्ति अदा करी !

सर्वप्रथम तो पू. भाईस्वामिजी के लिए एक सुन्दर आसन बनाया गया था। जिस पर 50 अंक तथा Golden Jubilee लिखकर सुवर्ण जयंती का संकेत दिया गया था। सभा में प.भ. दालिया साहब, प.भ. पुरी साहेब, प.भ. डॉ. शर्मा, प.भ. प्रभाकरभाई आदि हरिभक्तों ने पू. भाईस्वामिजी की विशेषताएं बताई कि पू. भाईस्वामिजी आज पू. गुरुजी को दिल्ली में प.पू. काकाजी का कार्य करने में अपना कितना सहकार देकर, अनोखी भक्ति अदा कर रहे हैं। इसके पश्चात् पूजन-हारविधि, केक कटिंग का प्रोग्राम था... सभी अत्यधिक आनंद में झूम रहे थे।

पू. भाईस्वामिजी ने इस मंगल अवसर पर आशीष प्रदान करते हुए बात करी-**'पू. गुरुजी के साथ मुझे एक दिव्य समाज की सेवा मिली है.... प.पू. काकाजी ने दी है, वह मेरे पर प.पू. काकाजी की Special करुणा है। बड़े आसनों से कोई विशेषता नहीं है... सत्पुरुष के दिल में आसन हमेशा रहे-वह विशेषता है.... सत्संग बढ़े उससे विशेषता नहीं... हममें सत्संग कितना टिका वह विशेषता है.... हमारे में विवेक होना खूब जरूरी है.....'**

फिर प.पू. गुरुजी ने शरदपूर्णिमा व पू. भाईस्वामिजी की जयंती निमित्त बात करते हुए कहा-**'आज शरद्‌पूर्णिमा-साकार ब्रह्म का प्रागट्यदिन.... आज का दिन खूब महत्व का है क्योंकि असली साधु गुणातीतानंदस्वामी को महाराज धरती पर साथ में लाए.... सूर्य का nature है प्रकाश देना। चन्द्र का nature है शीतलता देनी। अग्नि का nature है गर्मी देना। बर्फ का nature है ठंडक देना। मिर्च का nature है तीखी लगेगी। चीनी का nature है मिठास देना। लोह चुम्कक का nature है हर लोहे को खींच कर उसे चुंबकत्व प्रदान करना। वैसे ही सच्चे साधु का nature है कि वह 'साधु' करे-हमें साधु बना दे.. हम ऐसे सच्चे साधु की परम्परा में आ गए। सो हम खूब भाग्यशाली हैं जो पू. काकाजी पू. पप्पाजी, पू. स्वामिजी के संग में आ गए.... बस वे हमें साधु जरूर बनायेंगे, हमें मांगना नहीं पड़ेगा... हां Choice हमारे हाथ में है कि रोते-रोते बने, हंसते-रोते बने या हंसते-हंसते सरलता से बने। जो अंखड भगवान को रखे-वह साधु ! अखंड भगवान् की मूर्ति में रहते हो जाएं, वह हम साधु बने। गुणातीतानंदस्वामी सच्चे साधु थे... अहम् की लकीर उन्हें छू नहीं पाई थी। हमारे लिए कैसा आदर्श रखकर गुणातीतानंदस्वामी जीये होंगे।'**

पू. गुरुजी ने मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी के दो प्रसंग भी बताए और बात करी-**'हमारी आकांक्षा तो रहती है हममें भगवान प्रगट हो, पर उसके लिए पूरा खाली होना पड़ता है। पर जब तक मैं कुछ हूं Existential awareness -मैं पना भूला नहीं जाते... अपना 'स्व' का**

भाव भूल कर खाली नहीं हो जाते तब तक भगवान की मूर्ति भीतर में आकर नहीं बैठती। त्याग, विनम्रता, नियम-मर्यादा वगैरह सब गुणों से साधु की विशेषता नहीं.... पर अगर हम भगवान रखेंगे, तो सारे गुणों की वरमाला अपने आप हमारे गले में आ जाएगी.... महिमा से सेवा करेंगे तो पू. काकाजी हमारे भीतर के Hall को साफ कर देंगे और एक दूसरे के सूचन स्वीकार करके सेवा करें तो चार चांद लग जाए.. करोड़ों साल की प्रकृति जो खूब साधनों से न टले-वह जोड़ में काम करने से speedy progress से हो जाए.... जिसको एकांतिकभाव सिद्ध करना है उसे जोड़ में काम करना ही पड़ेगा.. पू. भाईस्वामिजी की जयंती पर यही सीखें कि जोड़ में काम करना.....'

पू. गुरुजी को पू. भाईस्वामिश्री के प्रति एक अलग ही respect है.. दोनों का संबंध कभी सखाभाव के रूप में, गुरुभाई, सेवकभाव के रूप में छलकता है... पू. गुरुजी ने पू. भाईस्वामिजी को एक कार्ड दिया... जिससे उनके दिल की मार्मिक भावनाएं स्पष्ट व्यक्त हो रही थीं कि प.पू. काकाजी के स्थूल रूप से शरीर छोड़ने के बाद दिल्ली में कार्य करने में पू. भाईस्वामिजी ने पू. गुरुजी को अत्यधिक साथ दिया... आज पू. गुरुजी पू. भाईस्वामिजी के कारण मंदिर से निश्चिंत हैं.... 'एकता वही एकांतिकभाव !' प.पू. काकाजी के इस ब्रह्मसूत्र पर पू. गुरुजी ने जोर दिया था... कार्ड की मार्मिक प्रार्थना सुनकर सभी की आंखें नम हो गई.... इस तरह शरदपूर्णिमा व पू. भाईस्वामिजी की सुवर्ण जयंती हर्षोल्लास व आनंद से मना कर अंत में प्रसाद लेकर सभी ने स्वयं को कृतार्थ किया.....

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

स्वामी की बातें

451. कुठार में हरिशंकरभाई ने पूछा कि-हे महाराज ! आसरे का क्या लक्षण है? तब उत्तर किया कि जैसे घरवाली एवं बच्चों को आसरा है वैसे, एवं रुपये होंगे तो भूखे नहीं मरेंगे वह आसरा है और भगवान के बिना दूसरे में माल नहीं माने यह आसरे का लक्षण है। जिसे ऐसा आसरा हो उसे भगवान अच्छे साधु का संग देकर, ज्ञान देकर स्वयं के पास रखते हैं और ऐसे भक्त की फिक्र भगवान को है। जैसे हमारे मंदिर में आज ही कोई व्यक्ति आया हो और कल बीमार पड़े तथा बीस साल तक बीमार रहे,तो भी उसकी सेवा हमें करनी पड़े और उसकी फिक्र हमें रहे वैसे। फिर पूछा कि-भगवान मिलने के बाद भगवान के भक्त के साथ अहंकार क्यों रहता है? तब उत्तर दिया कि वह तो रजोगुण में यूं रहे। *प्र.-5,258*

452. कोई भगवान भजे और भले ही कुछ उद्यम न करे तो उसे खाना मुझे वहीं देना है और उसके घर के सदस्यों की अन्न-वस्त्र की पूर्ति करना-वह हमारे सिर पर है। यूं दया करके कहा। *प्र.-5,259*

453. कार्तिकस्वामी ने पृथ्वी की प्रदक्षिणा की और गणपति को पार्वतीजी ने करामात बताई, जिससे पृथ्वी की प्रदक्षिणा नहीं करनी पड़ी और कन्या मिली। यूं बड़ों के समागम का फल है। *प्र.-5,261*

454. माधवजी सुतार का नाम लेकर सभी को कहा कि मेरे समागम में नहीं रहते, इतनी खोट है। *प्र.-5,262*

455. अच्छे व्यक्ति को वर्तने में तो कुछ फर्क नहीं होता, लेकिन उसे समझने में हमारा फर्क रहता है *प्र.-5,263*

456. .... यहां मंदिर में साधु के पास रहा नहीं जाता और घर में भी मन नहीं लगता। *प्र.-5,264*

457. स्त्री सब कुछ-सर्वस्व लूटाकर पति को रखती है ताकि विधवापन न गुजारना पड़े। उस पर हरिशंकरभाई ने दृष्टांत दिया कि भले सोए-सोए खाए और घर में रहे तो विधवापन का जीवन न बिताना पड़े। वैसे ही हमें सब कुछ लूटाकर भगवान रखने हैं। *प्र.-5,265*

458. व्यासजी ने कीड़े को तीन-चार जन्म दिलवा कर भी मोक्ष किया। यूं संत का समागम हुआ हो तो वह छोड़े नहीं। तब हरिशंकरभाई ने पूछा कि इतने जन्म दिलवाने से बेहतर तो एक ही जन्म में क्यों पार नहीं किया? तब उत्तर दिया कि ज्ञान हुए बिना पार होता नहीं और बड़े तो एक जन्म में ही ज्ञान दे देते हैं। लेकिन हम से माना नहीं जाता। वहां दृष्टांत दिया कि एक हरिभक्त पर मुझे तुम्हारे जितना ही प्रेम था लेकिन मेरा माना नहीं और फिर दोबारा शादी करी। *प्र.-5,266*

459. बड़े संत थोड़ी-सी भी दृष्टि करें तो कामादिक दोष परेशान नहीं कर सकते और स्वयं के बल से भले कितना ही परिश्रम करें लेकिन कामादिक हमें हरा ही दे। सो, बड़े संत का दृढ़ आसरा करना। *प्र.-5,267*

460. भगवान का लड़का हो तो भी साधु समागम के बिना और वचनामृत को लेकर बैठे बिना समझ आयेगी नहीं और वैसा न कर पाये तो साधु में जैसा माल है वैसा दूसरों में माल नहीं इतना जरुर समझना, यूं अभ्यास से ही कसर टलती है। *प्र.-5,269*

व्रतोत्सवसूची

1) दि. 28.10.95 शनिवार लाभपंचमी
2) दि. 3.11.95 शुक्रवार प्रबोधनी एकादशी, व्रत
3) दि. 19.11.95 रविवार एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053